Training Programme on
Nursery Techniques of Atish and Chora- important temperate Medicinal Plants: A Report

(Held at Village Khatnol of Shimla district on 25th November, 2012)

The Himalayan Forest Research Institute, Shimla has been working on medicinal plants since 2001 and has developed nursery techniques of important temperate medicinal plants species viz. Kukti (*Picrorhiza kurroa*), Atish (*Aconitum heterophyllum*), Chora (*Angelica glauca*), Mushakbala (*Valeriana jatamasi*) etc. Subsequently, National Medicinal Plants Board, New Delhi funded two projects to the Institute during 2004 to 2010 for mass production of quality planting material of abovementioned four species and extension of their cultivation technology among local communities. In those projects around 8 lakhs QPM was produced and distributed to various stakeholders. One of those projects namely 'Production of Quality Planting Material of *Aconitum heterophyllum* Wall. *ex* Royle & *Angelica glauca* Edgew. and extension of their cultivation technology to local communities' has been approved by ICFRE under **'Direct to Consumer'** Scheme to augment rural income through cultivation of these medicinal plants.

Under this scheme to develop specific skills of the targeted farmers, a one day training programme on **'Nursery Techniques of Atish and Chora – important temperate Medicinal Plants'** at village Khatnol of district Shimla, (H.P.) on 25th November 2012 was organized by the Institute. For quickly transferring the technology to the field it has been organized at the doorstep of the farmer's field at village Khatnol of Shimla district with active participation of members of Panchayati Raj Institutions.

Dr. Sandeep Sharma, Scientist-E HFRI and PI of this scheme during his inaugural address welcomed approximately 25 no. of the participants specially invited for this training programme and explained about the importance of Direct to Consumer Scheme. He requested farmers to take active part under this scheme for the upliftment of medicinal plants sector in this region. He told that the higher region of North-West Himalaya has the distinction of being one of the richest repositories of medicinal and aromatic plants resources in the country. The farmers of these regions have niche area advantages for cultivating these medicinal plants. Sh. Jagdish Singh, Scientist-E of the institute briefed about the day's event and subsequently made an institutional presentation for highlighting the Institutional activities. He further talked about identification of important temperate medicinal plants, inter-cultivation of medicinal plants in fruit orchards, harvesting and processing of medicinal plants etc. Then again Dr. Sandeep Sharma presented the specific nursery techniques of Atish (*Aconitum heterophyllum*), Kutki (*Picrorhiza kurroa*), Mushakbala (*Valeriana jatamasi*) & Chora (*Angelica glauca*), establishment of Kisan Nursery, composting, vermi-composting and importance of cooperatives for the marketing of medicinal plants. Seeds of Atish and Chora were distributed among motivated farmers ready to associate in this scheme. The sowing will be done during December and activities will be monitored regularly in the farmer's field for the success of this scheme.

Sh. Budi Singh, Dy. RO and Sh. Dulip Prasher, Field Assistant of HFRI, Shimla demonstrated the macro-proliferation techniques of important medicinal plants during the training programme and also distributed some plants of Chora and Mushakbala among participants for immediate cultivation in their field. During the plenary session of the training, participants interacted freely with the experts and their queries were duly addressed through expert opinion on the spot. In the end, on behalf of Director, HFRI a special Vote of Thanks was extended by Dr. Sandeep Sharma to all the participants. Local media also covered the event nicely.

Group Photo of Participants & Resource persons

Participants concentrating during lecture session

Resource person delivering lecture

Resource persons addressing queries during panel discussion

दैनिक भास्कर

शिमला, सोमवार, 26 नवंबर, 2012 3

जड़ी बूटियों का किया जाए दोहन

जड़ी बूटियों के कृषिकरण से सुधरेगी आर्थिकी

» 'उपभोक्ता के द्वार स्कीम' के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | शिमला

जड़ी-बूटियों के समुचित दोहन व कृषिकरण से किसानों की आर्थिकी में सुधार लाया जा सकता है। इस संबंध में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से खटनोल पंचायत में 'उपभोक्ता के द्वार स्कीम' एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अनुसंधान के वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पंचायत के कई क्षेत्र बहुमूल्य जड़ी बूटियों से समृद्ध है। उनका समुचित दोहन व कृषिकरण किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि संस्थान की ओर से अतीस, चौरा, निहानी और कडू आदि की नर्सरी विकसित कर दी गई है और इन प्रजातियों के लाखों पौधे तैयार कर किसानों में वितरित किए जाएंगे। यही नहीं उपभोक्ता के द्वार स्कीम के तहत किसानों को औषधीय पौधों की नर्सरी तैयार करने की तकनीक भी सिखाई जाएगी। उनका बीज उपलब्ध करवा इस कार्य से सीधे जोड़ा जाएगा। जिससे किसान इन पौधों की खेती करने में सक्षम हो सके। उन्होंने कहा कि स्कीम के तहत यह भी प्रयास किया जाएग कि किसानों के उत्पाद को बाज़ार में उचित मूल्य मिल सके। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को बूटियों के व्यवसायिक कृषि करण, तकनीक, नर्सरी, जैविक खेती, कंपोस्ट एवं वर्मी कंपोस्ट बनाने के बारे में जानकारी दी गई।

कई क्षेत्रों में भ्रमण भी करवाया जाएगा

प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के वैज्ञानिक वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने समशीतोष्ण पौधों की पहचान और कृषि वानिकी में इनमें समन्वय, उनके एकत्र एवं संग्रहण के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जागरूक किसानों को प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण के लिए कुल्लू मनाली व नारकंडा क्षेत्रों का शैक्षणिक भ्रमण करवाया जाएगा। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. बीआर सिंह की ओर से सभी प्रतिभागियों का आभार जताया।

दिव्य हिमाचल
सोमवार, 26 नवंबर, 2012

खटनोल के किसानों को समझाई खेती

■ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा शिमला जिला के खटनोल पंचायत में रविवार को उपभोक्ता के द्वार स्कीम के अंतर्गत एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण का शुभारंभ डा. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक एवं इस स्कीम के अनवेषक ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र कई बहुमूल्य जड़ी-बूटियों से समृद्ध है। जड़ी-बूटियों का समुचित दोहन व कृषिकरण द्वारा किसानों की आर्थिकी को मजबूत किया जा सकता है। उन्होंने यह जानकारी भी दी कि संस्थान द्वारा अतीश, चौरा, कडू, निहानी आदि की नर्सरी तकनीक विकसित कर दी गई है तथा इन प्रजातियों के लाखों पौधे तैयार करके किसानों आदि को वितरित किए जा चुके हैं, अब उपभोक्ता के द्वार स्कीम के अंतर्गत किसानों को औषधीय पौधों की नर्सरी तैयार करने की तकनीक दी जाएगी तथा बीज आदि उपलब्ध करवा कर इस कार्य से सीधे जोड़ा जाएगा, जिससे कि किसान औषधीय पौधों की खेती करने में पूरी तरह से सक्षम हो जाए। स्कीम के अंतर्गत यह भी प्रयास किया जाएगा कि किसानों के उत्पाद को बाजार में उचित मूल्य मिल सके जिसके लिए मार्केटिंग अनुबंधन स्थापित करने के लिए उचित मार्गदर्शन किया जाएगा।

■ हिमालयन वन अनुसंधान के वैज्ञानिकों ने बांटा ज्ञान

प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने महत्त्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधे जैसे पतीश, चौरा, कडू, निहानी आदि की व्यवसायिक कृषिकरण, तकनीक जैविक खेती की विधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। संस्थान के निदेशक डा. बीआर सिंह की ओर से वैज्ञानिक डा. संदीप शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि स्कीम के अंतर्गत यह भी प्रयास किया जाएगा कि किसानों के उत्पाद को बाजार में उचित मूल्य मिल सके जिसके लिए मार्केटिंग अनुबंधन स्थापित करने के लिए उचित मार्गदर्शन किया जाएगा।